प्रेस विज्ञप्ति

छात्रों ने लिया हिंद स्वराज के गहन अध्ययन का संकल्प

- सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में गांधी जयंती पर हिंद स्वराज का पाठ
- गांधी जी की जीवनी भी पढ़ने की ली शपथ
- श्रम की महत्ता, बुनियादी तालीम, अहिंसा और विकास के विषयों का पाठ
- 'करुणा और प्रेम के कारण कहा जाता था बापू'

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं वर्षगांठ पर छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने गांधी जी की क़िताब "हिंद स्वराज" का पाठ किया। हिंद स्वराज के माध्यम से छात्रों ने प्रकृति, शहरीकरण के दुष्प्रभाव, पश्चिमीकरण, ग्रामों की अभिकल्पना इत्यादि के विषय में जाना। यह किताब गांधी जी ने 1909 में लिखी थी जब उन्होंने भारतीय राजनीति में प्रवेश भी नहीं किया था।

विश्वविद्यालय के छात्रों ने इस किताब के अलग-अलग पाठों के अंशों का एक साथ सामूहिक अध्ययन किया। छात्रों ने संकल्प भी लिया कि वो गांधी जी द्वारा लिखी गई इस पुस्तक को पूरा पढ़ेंगे और गांधी जी की जीवनी का भी गहन अध्ययन करेंगे। इसके अलावा गांधी जी के दर्शन के विभिन्न विषयों पर भी चर्चा की गई।

योग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ उपेंद्र बाबू खत्री ने गांधी जी द्वारा बताई गई **'श्रम की महत्ता'** पर बात की। सह प्राध्यापक श्री प्रभाकर पांडे ने गांधी जी के शिक्षा दर्शन में "**बुनियादी तालीम(शिक्षा)**" के अर्थ को पाठ के माध्यम से प्रस्तुत किया। जबकि छात्र शुभम भंते ने गांधी जी के मौलिक दर्शन में अहिंसा और विकास के विषय पर प्रकाश डाला। पी.एच.डी के छात्र विनय तिवारी ने **सत्य, शिव और सुंदर की अवधारणा** तथा गांधी जी द्वारा मशीनीकरण के विरोध के कारण से अवगत कराया।

विश्वविद्यालय के सह प्राध्यापक डॉ नवीन महता ने बताया कि बापू को बापू एवं महात्मा के अर्थ से अधिक करुणा और प्रेम के कारण बापू कहा जाता था। विश्वविद्यालय के डीन प्रो. ओपी बुधोलिया ने बताया कि गांधी जी मानते थे कि सबसे अच्छा व्यक्ति वह है जिसके साथ आप हैं, सबसे अच्छा कर्म वो जिसे आप करते हैं और सबसे अच्छा समय आज का है जिसे आप जी रहे हैं। कार्यक्रम के धन्यवाद ज्ञापन के दौरान बताया कि गांधी जी संपूर्ण अर्थ में हिंदुस्तान का पर्याय थे। उन्होंने बताया कि यह क़िताब मूल रूप से गांधी जी द्वारा गुजराती भाषा में लिखी गई थी बाद में इसके कई अन्य भाषाओं में अनुवाद किए गए।

जागरण Lake सिटी
3 अक्टूबर, 2019 www.jagranmp.com/epaper

छात्रों ने लिया हिंद स्वराज के गहन अध्ययन का संकल्प

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में गांधी जयंती पर हिंद स्वराज का पाठ

● जागरण सिटी रिपोर्टर ●

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं वर्षगांठ पर छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने गांधी जी की किताब 'हिंद स्वराज' का पाठ किया। हिंद स्वराज के माध्यम से छात्रों ने प्रकृति, शहरीकरण के दुष्प्रभाव, पश्चिमीकरण, ग्रामों की अभिकल्पना इत्यादि के विषय में जाना। यह किताब गांधी जी ने 1909 में लिखी थी जब उन्होंने भारतीय राजनीति में प्रवेश भी नहीं किया था।

विश्वविद्यालय के छात्रों ने इस किताब के अलग-अलग पाठों के अंशों का एक साथ सामूहिक अध्ययन किया। छात्रों ने संकल्प भी लिया कि वो गांधी जी द्वारा लिखी गई इस पुस्तक को पूरा पढ़ेंगे और गांधी जी की जीवनी का भी गहन अध्ययन करेंगे। इसके अलावा गांधी जी के दर्शन के विभिन्न विषयों पर भी चर्चा की गई।

योग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. उपेंद्र बाबू खत्री ने गांधी जी द्वारा बताई गई 'श्रम की महत्ता' पर बात की। सह प्राध्यापक प्रभाकर पांडे ने गांधी जी के शिक्षा दर्शन में 'बुनियादी तालीम(शिक्षा)' के अर्थ को पाठ के माध्यम से प्रस्तुत किया। जबकि छात्र शुभम भंते ने गांधी जी के मौलिक दर्शन में अहिंसा और विकास के विषय पर प्रकाश डाला। पीएचडी के छात्र विनय तिवारी ने सत्य, शिव और सुंदर की अवधारणा तथा गांधी जी द्वारा मशीनीकरण के विरोध के कारण से अवगत कराया।

The Best WordPress **Magazine** and **Blog** theme
from Theme Freesia
DOWNLOAD NOW

SLIDER खास ख़बरें ब्रेकिंग न्यूज़ मध्य प्रदेश मध्यप्रदेश राष्ट्रीय

रायसेन- जिले के सॉची बौद्ध विश्वविद्यालय के छात्रों ने लिया हिंद स्वराज के गहन अध्ययन का संकल्प।

October 2, 2019

छात्रों ने लिया हिंद स्वराज के गहन अध्ययन का संकल्प

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में गांधी जयंती पर हिंद स्वराज का पाठ

रायसेन-जिले के सॉची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं वर्षगांठ पर छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने गांधी जी की क़िताब "हिंद स्वराज" का पाठ किया। हिंद स्वराज के माध्यम से छात्रों ने प्रकृति, शहरीकरण के दुष्प्रभाव, पश्चिमीकरण, ग्रामों की अभिकल्पना इत्यादि के विषय में जाना। यह किताब गांधी जी ने 1909 में लिखी थी जब उन्होंने भारतीय राजनीति में प्रवेश भी नहीं किया था।

विश्वविद्यालय के छात्रों ने इस किताब के अलग-अलग पाठों के अंशों का एक साथ सामूहिक अध्ययन किया। छात्रों ने संकल्प भी लिया कि वो गांधी जी द्वारा लिखी गई इस पुस्तक को पूरा पढ़ेंगे और गांधी जी की जीवनी का भी गहन अध्ययन करेंगे। इसके अलावा गांधी जी के दर्शन के विभिन्न विषयों पर भी चर्चा की गई।

योग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ उपेंद्र बाबू खत्री ने गांधी जी द्वारा बताई गई 'श्रम की महत्ता' पर बात की। सह प्राध्यापक श्री प्रभाकर पांडे ने गांधी जी के शिक्षा दर्शन में "बुनियादी तालीम(शिक्षा)" के अर्थ को पाठ के माध्यम से प्रस्तुत किया। जबकि छात्र शुभम भंते ने गांधी जी के मौलिक दर्शन में अहिंसा और विकास के विषय पर प्रकाश डाला। पी.एच.डी के छात्र विनय तिवारी ने सत्य, शिव और सुंदर की अवधारणा तथा गांधी जी द्वारा मशीनीकरण के विरोध के कारण से अवगत कराया।

विश्वविद्यालय के सह प्राध्यापक डॉ नवीन महता ने बताया कि बापू को बापू एवं महात्मा के अर्थ से अधिक करुणा और प्रेम के कारण बापू कहा जाता था। विश्वविद्यालय के डीन प्रो. ओपी बुधोलिया ने बताया कि गांधी जी मानते थे कि सबसे अच्छा व्यक्ति वह है जिसके साथ आप हैं, सबसे अच्छा कर्म वो जिसे आप करते हैं और सबसे अच्छा समय आज का है जिसे आप जी रहे हैं। कार्यक्रम के धन्यवाद ज्ञापन के दौरान बताया कि गांधी जी संपूर्ण अर्थ में हिंदुस्तान का पर्याय थे। उन्होंने बताया कि यह क़िताब मूल रूप से गांधी जी द्वारा गुजराती भाषा में लिखी गई थी बाद में इसके कई अन्य भाषाओं में अनुवाद किए गए।

ब्यूरो रिपोर्ट प्रिंस मीडिया न्यूज़ खबर आपके साथ रायसेन मध्यप्रदेश

abhitak.news

छात्रों ने लिया हिंद स्वराज के गहन अध्ययन का संकल्प गांधी जी की जीवनी भी पढ़ने की ली शपथ

दीपक कांकर

रायसेन 02 अक्टूबर ;अभी तक; सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं वर्षगांठ पर छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने गांधी जी की क़िताब "हिंद स्वराज" का पाठ किया। हिंद स्वराज के माध्यम से छात्रों ने प्रकृति, शहरीकरण के दुष्प्रभाव, पश्चिमीकरण, ग्रामों की अभिकल्पना इत्यादि के विषय में जाना। यह किताब गांधी जी ने 1909 में लिखी थी जब उन्होंने भारतीय राजनीति में प्रवेश भी नहीं किया था।

छात्रों ने लिया हिंद स्वराज के गहन अध्ययन का संकल्प गांधी जी की जीवनी भी पढ़ने की ली शपथ

विश्वविद्यालय के छात्रों ने इस किताब के अलग-अलग पाठों के अंशों का एक साथ सामूहिक अध्ययन किया। छात्रों ने संकल्प भी लिया कि वो गांधी जी द्वारा लिखी गई इस पुस्तक को पूरा पढ़ेंगे और गांधी जी की जीवनी का भी गहन अध्ययन करेंगे। इसके अलावा गांधी जी के दर्शन के विभिन्न विषयों पर भी चर्चा की गई।

योग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ उपेंद्र बाबू खत्री ने गांधी जी द्वारा बताई गई 'श्रम की महत्ता' पर बात की। सह प्राध्यापक श्री प्रभाकर पांडे ने गांधी जी के शिक्षा दर्शन में "बुनियादी तालीम(शिक्षा)" के अर्थ को पाठ के माध्यम से प्रस्तुत किया। जबकि छात्र शुभम भंते ने गांधी जी के मौलिक दर्शन में अहिंसा और विकास के विषय पर प्रकाश डाला। पी.एच.डी के छात्र विनय तिवारी ने सत्य, शिव और सुंदर की अवधारणा तथा गांधी जी द्वारा मशीनीकरण के विरोध के कारण से अवगत कराया।
विश्वविद्यालय के सह प्राध्यापक डॉ नवीन महता ने बताया कि बापू को बापू एवं महात्मा के अर्थ से अधिक करुणा और प्रेम के कारण बापू कहा जाता था। विश्वविद्यालय के डीन प्रो. ओपी बुधोलिया ने बताया कि गांधी जी मानते थे कि सबसे अच्छा व्यक्ति वह है जिसके साथ आप हैं, सबसे अच्छा कर्म वो जिसे आप करते हैं और सबसे अच्छा समय आज का है जिसे आप जी रहे हैं।

प्रेस विज्ञप्ति

यूजीसी का 'उरकुंड' पकड़ेगा थीसिस की चोरी

- **यूजीसी के सॉफ्टवेयर 'उरकुंड' का प्रशिक्षण आयोजित**
- **शोध में साहित्य चोरी रोकने की पहल**
- **मौलिक शोध में टॉप 10 देशों से गिरा भारत**
- **साहित्य चोरी के लिए 3 साल की सज़ा का है प्रावधान**

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के छात्रों ने आज शोध में साहित्य चोरी(प्लेगरिज़्म) जांचने के तरीके जाने। विश्वविद्यालय की केंद्रीय लाइब्रेरी के द्वारा छात्रों और उनके गाइड को यूजीसी के सॉफ्टवेयर उरकुंड का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहायक लाइब्रेरियन डॉ. अमित ताम्रकार ने बताया कि कैसे शोधार्थी अपनी थीसिस को जमा करने से पहले यूजीसी के इस सॉफ्टवेयर उरकुंड के माध्यम से प्लेगरिज़्म को जांच सकते हैं वो भी बगैर किसी शुल्क को चुकाए।

दरअसल, पूर्व में की गई किसी अन्य शोध से टेक्स्ट, फोटो, डेटा, पैराग्राफ, शोध के मूल विचार(आइडिया) इत्यादि को हू-ब-हू कॉपी कर अपनी शोध में सम्मिलित कर देना प्लेगरिज़्म या साहित्य चोरी कहलाता है। एक शोधार्थी अपनी शोध में पूर्व में की गई शोध के किसी हिस्से को हवाला देकर अपनी शोध में शामिल कर सकता है। लेकिन अगर वह इसे बगैर किसी रिफरेंस(हवाले) के अपनी शोध में सम्मिलित कर लेता है तो इसे साहित्य चोरी की श्रेणी में माना जाता है।

यूजीसी का प्रयास है कि भारत में होने वाली किसी भी शोधार्थी की शोध पूर्णत: मौलिक हो जिससे देश को लाभ हो सके। डॉ ताम्रकार ने बताया कि मौलिक शोधों के लिए 1980 तक दुनिया के 10 देशों में भारत का नाम आता था जो कि 1990 तक 12वां हुआ सन् 2000 तक भारत 20वें स्थान पर पहुंचा जबकि अब यह स्थान 30 से 40 वां है।

डॉ ताम्रकार ने छात्रों को बताया कि वो प्रयास करें कि उनके शोध में 10 प्रतिशत से कम प्लेगरिज़्म आए। उनका कहना था कि किसी भी शोध में 60 प्रतिशत से अधिक प्लेगरिज़्म होने पर शोधार्थी का रजिस्ट्रेशन रद्द किया जा सकता है। उनका कहना था कि प्लेगरिज़्म साबित होने पर साहित्यिक चोरी करने वाले को 6 माह से 3 साल की जेल, 50 हज़ार से 3 लाख रुपए तक जुर्माना अथवा दोनों हो सकते हैं।

उन्होंने बताया कि अगर किसी ने साहित्यिक चोरी के माध्यम से शोध कर नौकरी पा ली है तो ऐसी स्थिति में उसके इंक्रीमेंट्स रोके जा सकते हैं और नौकरी से निकाला भी जा सकता है। डॉ ताम्रकार ने देश के बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में शोध कर रहे शोधार्थियों और गाइडों पर की गई कार्रवाइयों के मीडिया करवेज से भी अवगत कराया। उन्होंने बताया कि एक विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय को भी तिहाड़ जेल में साहित्य चोरी के लिए सज़ा भुगतनी पड़ी थी।

शोधार्थियों को इस प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि यूजीसी गाइडालइन के अनुसार वो किसी पूर्व शोध से लिए गए अंश को किस प्रकार से हवाला देकर अपने शोध में सम्मिलित करें कि शोध भी पूर्ण लगे और शोध साहित्यिक चोरी के दायरे में न आए। डॉ ताम्रकार ने कई फ्री साइट्स भी बताईं जो शोधार्थियों को नि:शुल्क अपनी थीसिस जांचने की सुविधा मुहैया कराती हैं।

डॉ ताम्रकार ने बताया कि यूजीसी इनफ्लिबनेट का उरकुंड सॉफ्टवेयर सांची विश्वविद्यालय को प्रत्येक वर्ष 212 डॉक्यूमेंट्स जांचने की निशुल्क सुविधा प्रदान कर रहा है। इस प्रकार से एक यूज़र 4 डॉक्यूमेंट्स जांच सकता है जबकि प्रत्येक डॉक्यूमेंट में 20 पेज तक जांचने की सुविधा है। उरकुंड सॉफ्टवेयर इंटरनेट के माध्यम से शोधार्थी के थीसिस के टेक्स्ट को पीला कर तुरंत बता देता है कि उसके द्वारा इस हिस्से को कहां से लिया गया है और उसमें सुधार की आवश्यकता है।

विश्वविद्यालय के डीन डॉ ओपी बुधोलिया ने छात्रों को बताया कि वो अपनी शोध को मौलिक रखेंगे तो प्लेगरिज़्म का डर ही नहीं होगा। अंग्रेज़ी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ नवीन मेहता ने कहा कि छात्रों को पेटेंट, इंटलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स और एस.पी.एस.एस सॉफ्टवेयर की ट्रेनिंग की भी आवश्यकता है जिसे कि लाइब्रेरी विभाग के माध्यम से छात्रों को प्रदान की जाएगी।

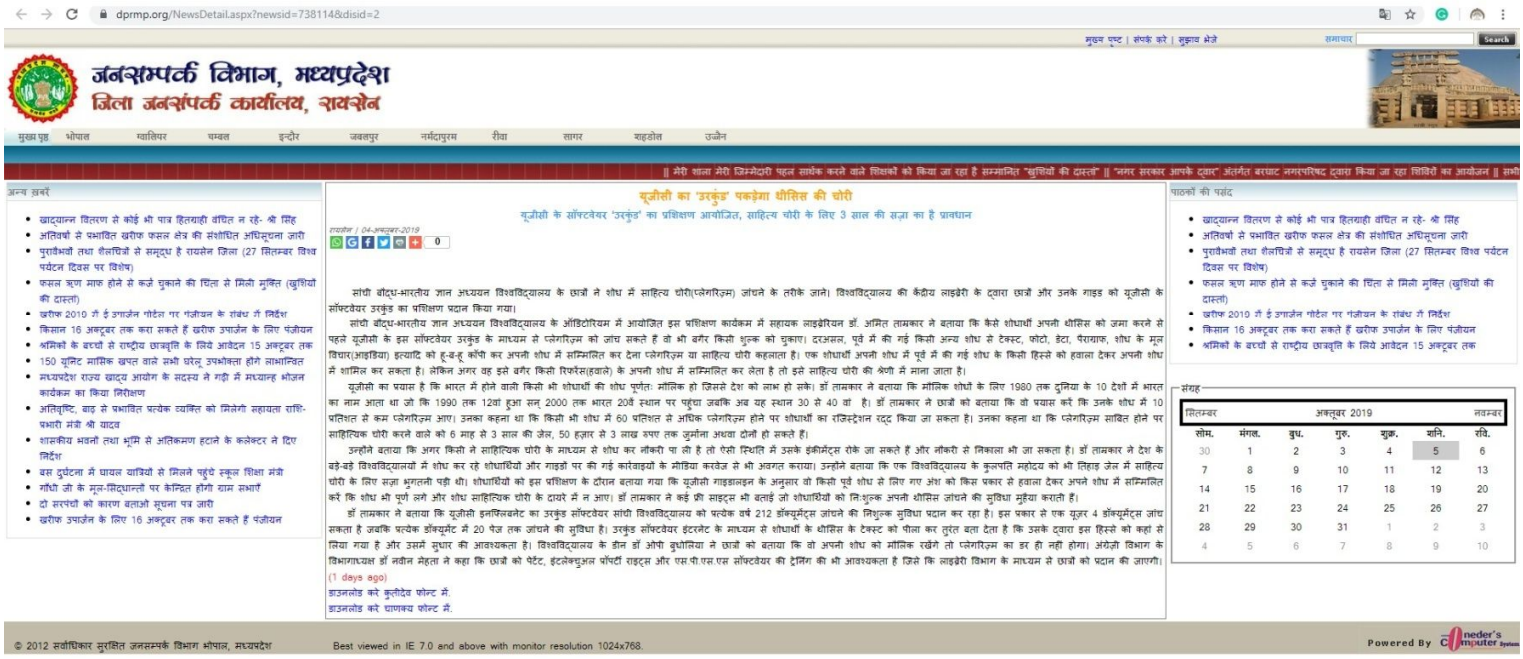

पत्रिका PLUS Weekend CITYLIVE

भोपाल, शनिवार, 05 अक्टूबर, 2019 | 06

सांची विवि में यूजीसी सॉफ्टवेयर की ट्रेनिंग

'उरकुंड' पकड़ेगा थीसिस में की गई चोरी

भोपाल • सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के छात्रों ने शुक्रवार को शोध में साहित्य चोरी (प्लेगरिज्म) जांचने के तरीके जाने। विवि की केंद्रीय लाइब्रेरी द्वारा छात्रों और उनके गाइड को यूजीसी के सॉफ्टवेयर उरकुंड का प्रशिक्षण दिया गया।

सहायक लाइब्रेरियन डॉ. अमित ताम्रकार ने बताया कि कैसे शोधार्थी थीसिस जमा करने से पहले यूजीसी के सॉफ्टवेयर उरकुंड के माध्यम से प्लेगरिज्म को जांच सकते हैं वो भी निःशुल्क।

दरअसल, पूर्व में की गई किसी अन्य शोध से टेक्स्ट, फोटो, डेटा,

पैराग्राफ, शोध के मूल विचार इत्यादि को हू-ब-हू कॉपी कर शोध में सम्मिलित कर देना प्लेगरिज्म या साहित्य चोरी कहलाता है। एक शोधार्थी अपनी शोध में पूर्व में की गई शोध के किसी हिस्से को हवाला देकर अपनी शोध में शामिल कर सकता है। लेकिन अगर वह इसे बगैर किसी रिफरेंस(हवाले) के अपनी शोध में सम्मिलित कर लेता है तो इसे साहित्य चोरी की श्रेणी में माना जाता है। डॉ. ताम्रकार ने छात्रों को बताया कि वो प्रयास करें कि उनके शोध में 10 प्रतिशत से कम प्लेगरिज्म आए। उनका कहना था कि किसी भी शोध में 60 प्रतिशत से अधिक प्लेगरिज्म होने पर शोधार्थी का रजिस्ट्रेशन रद्द किया जा सकता है। उनका कहना था कि प्लेगरिज्म साबित होने पर साहित्यिक चोरी करने वाले को 6 माह से 3 साल की जेल, 50 हजार से 3 लाख रुपए तक जुर्माना अथवा दोनों हो सकते हैं।

जागरण Lake सिटी

d 05 अक्टूबर, 2019 www.jagranmp.com/epaper

यूजीसी का 'उरकुंड' पकड़ेगा थीसिस की चोरी

शोध में साहित्य चोरी रोकने की पहल , मौलिक शोध में टॉप 10 देशों से गिरा भारत

• जागरण सिटी रिपोर्टर •

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के छात्रों ने शुक्रवार को शोध में साहित्य चोरी (प्लेगरिज्म) जांचने के तरीके जाने। विश्वविद्यालय की केंद्रीय लाइब्रेरी के द्वारा छात्रों और उनके गाइड को यूजीसी के सॉफ्टवेयर उरकुंड का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहायक लाइब्रेरियन डॉ. अमित ताम्रकार ने बताया कि कैसे शोधार्थी अपनी थीसिस को जमा करने से पहले यूजीसी के इस सॉफ्टवेयर उरकुंड के माध्यम से प्लेगरिज्म को जांच सकते हैं वो भी बगैर किसी शुल्क को चुकाए। दरअसल, पूर्व में की गई किसी अन्य शोध से टेक्स्ट, फोटो, डेटा, पैराग्राफ, शोध के मूल विचार(आइडिया) इत्यादि को हू-ब-हू कॉपी कर अपनी शोध में सम्मिलित कर देना प्लेगरिज्म या साहित्य चोरी कहलाता है। एक शोधार्थी अपनी शोध में

पूर्व में की गई शोध के किसी हिस्से को हवाला देकर अपनी शोध में शामिल कर सकता है, लेकिन अगर वह इसे बगैर किसी रिफरेंस(हवाले) के अपनी शोध में सम्मिलित कर लेता है तो इसे साहित्य चोरी की श्रेणी में माना जाता है। डॉ. ताम्रकार ने बताया कि मौलिक शोधों के लिए 1980 तक दुनिया के 10 देशों में भारत का नाम आता था जो कि 1990 तक 12वां हुआ। सन् 2000 तक भारत 20वें स्थान पर पहुंचा, जबकि अब यह स्थान 30 से 40 वां है।

शोध में 10 प्रतिशत से कम प्लेगरिज्म आए

डॉ. ताम्रकार ने छात्रों को बताया कि वो प्रयास करें कि उनके शोध में 10 प्रतिशत से कम प्लेगरिज्म आए। उनका कहना था कि किसी भी शोध में 60 प्रतिशत से अधिक प्लेगरिज्म होने पर शोधार्थी का रजिस्ट्रेशन रद्द किया जा सकता है। उनका कहना था कि प्लेगरिज्म साबित होने पर साहित्यिक चोरी करने वाले को 6 माह से 3 साल की जेल, 50 हजार से 3 लाख रुपए तक जुर्माना अथवा दोनों हो सकते हैं।

पत्रिका रायसेन

शनिवार, 05 अक्टूबर, 2019 | 12

यूजीसी का उरकुंड पकड़ेगा थीसिस की चोरी

रायसेन. सांची बौद्ध, भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के छात्रों ने शुक्रवार को शोध में साहित्य चोरी, प्लेगरिज्म जांचने के तरीके जाने। विश्वविद्यालय की केंद्रीय लाइब्रेरी के द्वारा छात्रों और उनके गाइड को यूजीसी के सॉफ्टवेयर उरकुंड का प्रशिक्षण दिया गया। विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहायक लाइब्रेरियन डॉ. अमित ताम्रकार ने बताया कि कैसे शोधार्थी अपनी थीसिस को जमा करने से पहले यूजीसी के इस सॉफ्टवेयर उरकुंड के माध्यम से प्लेगरिज्म को जांच सकते हैं वो भी बगैर किसी शुल्क को चुकाए। दरअसल पूर्व में की गई किसी अन्य शोध से टेक्स्ट, फोटो, डेटा, पैराग्राफ, शोध के मूल विचार इत्यादि को कॉपी कर अपनी शोध में सम्मिलित कर देना प्लेगरिज्म या साहित्य चोरी कहलाता है। एक शोधार्थी अपनी शोध में पूर्व में की गई शोध के किसी हिस्से को हवाला देकर अपनी शोध में शामिल कर सकता है। लेकिन अगर वह इसे बगैर किसी रिफरेंस के अपनी शोध में शामिल करता है तो इसे साहित्य चोरी की श्रेणी में माना जाता है।

18 रायसेन जिला
भोपाल, शनिवार 05 अक्टूबर 2019

यूजीसी का 'उरकुंड' सॉफ्टवेयर पकड़ेगा थीसिस की चोरी

सांची बौद्ध विवि में यूजीसी के उरकुंड सॉफ्टवेयर का प्रशिक्षण दिया गया। ● नवदुनिया

यूजीसी के सॉफ्टवेयर 'उरकुंड' का दिया गया प्रशिक्षण

रायसेन। नवदुनिया प्रतिनिधि

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के छात्रों ने शोध में साहित्य चोरी जांचने के तरीके जाने। विश्वविद्यालय की केंद्रीय लाइब्रेरी के द्वारा छात्रों और उनके गाइड को यूजीसी के सॉफ्टवेयर उरकुंड का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहायक लाइब्रेरियन डॉ. अमित ताम्रकार ने बताया कि कैसे शोधार्थी अपनी थीसिस को जमा करने से पहले यूजीसी के इस सॉफ्टवेयर उरकुंड के माध्यम से साहित्य चोरी को जांच सकते हैं वो भी बगैर किसी शुल्क को चुकाए। दरअसल, पूर्व में की गई किसी अन्य शोध से टेक्स्ट, फोटो, डेटा, पैराग्राफ, शोध के मूल विचार (आइडिया) इत्यादि को हू-ब-हू कॉपी कर अपनी शोध में सम्मिलित कर देना साहित्य चोरी कहलाता है। डॉ. ताम्रकार का कहना था कि किसी भी शोध में 60 प्रतिशत से अधिक साहित्य चोरी होने पर शोधार्थी का रजिस्ट्रेशन रद्द किया जा सकता है। साहित्य चोरी साबित होने पर साहित्यिक चोरी करने वाले को 6 माह से 3 साल की जेल, 50 हजार से 3 लाख रुपए तक जुर्माना अथवा दोनों हो सकते हैं।

विवि के लिए निशुल्क सुविधा

डॉक्टर ताम्रकार ने बताया कि यूजीसी इनफ्लिबनेट का उरकुड सॉफ्टवेयर सांची विश्वविद्यालय को प्रत्येक वर्ष 212 डॉक्यूमेंट्स जांचने की निशुल्क सुविधा प्रदान कर रहा है। इस प्रकार से एक यूजर 4 डॉक्यूमेंट्स जांच सकता है जबकि प्रत्येक डॉक्यूमेंट में 20 पेज तक जांचने की सुविधा है। उरकुंड सॉफ्टवेयर इंटरनेट के माध्यम से शोधार्थी के थीसिस के टेक्स्ट को पीला कर तुरंत बता देता है कि उसके द्वारा इस हिस्से को कहां से लिया गया है और उसमें सुधार की आवश्यकता है।

पीएचडी थीसिस की चोरी पर ऐसे लगेगा अंकुश, सभी विश्वविद्यालयों में होगी जांच

Publish Date:Fri, 04 Oct 2019 10:35 PM (IST)

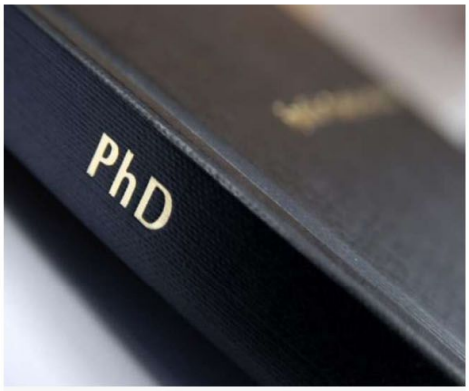

यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन (विवि अनुदान आयोग) ने पीएचडी थीसिस की चोरी रोकने के लिए (प्लेगरिज्म) उरकुंड सॉफ्टवेयर तैयार किया है।

NEXT STORIES

भोपाल, राज्य ब्यूरो। यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन (विवि अनुदान आयोग) ने पीएचडी थीसिस की चोरी रोकने के लिए (प्लेगरिज्म) उरकुंड साफ्टवेयर तैयार किया है। इससे अब सभी विश्वविद्यालयों में थीसिस जमा होने के पहले जांच की जाएगी। इसके जरिए छात्र से लेकर गाइड तक थीसिस की जांच मुफ्त में कर सकेंगे। यदि रिसर्च स्कॉलर ने थीसिस की कहीं से चोरी की होगी तो यह सॉफ्टवेयर चोरी को पकड़ लेगा। इस संबंध में सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के छात्रों को सॉफ्टवेयर की कार्यप्रणाली के बारे में बताया गया। यह प्रशिक्षण विवि की केंद्रीय लाइब्रेरी द्वारा छात्रों और उनके गाइड को दी गई।

सॉफ्टवेयर उरकुंड से होगी जांच

शुक्रवार को विवि के ऑडिटोरियम में आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहायक लाइब्रेरियन डॉ. अमित ताम्रकार ने बताया कि कैसे रिसर्च स्कॉलर अपनी थीसिस को जमा करने से पहले यूजीसी के इस सॉफ्टवेयर उरकुंड के जरिए प्लेगरिज्म को जांच सकते हैं वो भी बगैर किसी शुल्क चुकाए। डॉ. ताम्रकार ने छात्रों को बताया कि तो प्रयास करें कि उनके शोध में 10 प्रतिशत से कम प्लेगरिज्म आए। उनका कहना था कि प्लेगरिज्म साबित होने पर साहित्यिक चोरी करने वाले को 6 माह से 3 साल की जेल, 50 हजार से 3 लाख रुपए तक जुर्माना अथवा दोनों हो सकते हैं।

साहित्यिक चोरी है अपराध

उन्होंने बताया कि अगर किसी ने साहित्यिक चोरी के माध्यम से शोध कर नौकरी पा ली है तो ऐसी स्थिति में उसके इंक्रीमेंट्स रोके जा सकते हैं और नौकरी से निकाला भी जा सकता है। ये कहलाता है साहित्य चोरी पूर्व में की गई किसी अन्य शोध से टेक्स्ट, फोटो, डेटा, पैराग्राफ, शोध के मूल विचार (आइडिया) इत्यादि को हू- ब- हू कॉपी कर अपनी रिसर्च में शामिल कर देना प्लेगरिज्म या साहित्य चोरी कहलाता है। रिसर्च स्कॉलर पूर्व में की गई रिसर्च के किसी हिस्से का हवाला देकर अपनी रिसर्च में शामिल कर सकता है। लेकिन अगर वह इसे बगैर किसी रिफरेंस (हवाले) के अपनी शोध में शामिल कर लेता है तो इसे साहित्य चोरी की श्रेणी में माना जाता है।

हर साल जांचे जा सकेंगे 212 डॉक्यूमेंट्स

यूजीसी इनफ्लिबनेट का उरकुंड सॉफ्टवेयर सांची विवि को प्रत्येक वर्षर्ष 212 डॉक्यूमेंट्स जांचने की निशुल्क सुविधा प्रदान कर रहा है। इस प्रकार से एक यूजर 4 डॉक्यूमेंट्स जांच सकता है जबकि प्रत्येक डॉक्यूमेंट में 20 पेज तक जांचने की सुविधा है। उरकुंड सॉफ्टवेयर इंटरनेट के माध्यम से रिसर्च स्कॉलर के थीसिस के टेक्स्ट को पीला कर बता देता है कि उसके द्वारा इस हिस्से को कहां से लिया गया है और उसमें सुधार की आवश्यकता है।

सांची विश्वविद्यालय ने दिया उरकुंड सॉफ्टवेयर चलाने का प्रशिक्षण

Publish Date: | Sat, 05 Oct 2019 06:13 AM (IST)

यूजीसी ने तैयार किया सॉफ्टवेयर उरकुंड, सांची विश्वविद्यालय में दिया प्रशिक्षण भोपाल। यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) ने पीएचडी थीसिस की चोरी रोकने के लिए (प्लेगरिज्म) उरकुंड साफ्टवेयर तैयार किया है। इससे अब सभी विश्वविद्यालयों में थीसिस जमा होने के पहले जांच की जाएगी। इसके जरिए छात्र से लेकर गाइड तक थीसिस की जांच मुफ्त में क

- यूजीसी का है सॉफ्टवेयर, खुद कर सकते हैं अपनी थीसिस की जांच

भोपाल। नवदुनिया प्रतिनिधि

यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन (विवि अनुदान आयोग) के साफ्टवेयर उरकुंड चलाने के संबंध में सांची बौद्घ भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के छात्रों को बताया गया। यह प्रशिक्षण विवि की केंद्रीय लाइब्रेरी द्वारा छात्रों और उनके गाइड को दी गई। यूजीसी ने पीएचडी थीसिस की चोरी रोकने के लिए (प्लेगरिज्म) उरकुंड साफ्टवेयर तैयार किया है। अब सांची विश्वविद्यालय में भी इसके जरिए छात्र से लेकर गाइड तक थीसिस की जांच मुफ्त में कर सकेंगे। यदि रिसर्च स्कॉलर ने थीसिस की कहीं से चोरी की होगी तो यह सॉफ्टवेयर चोरी को पकड़ लेगा। शुक्रवार को विवि के ऑडिटोरियम में आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहायक लाइब्रेरियन डॉ. अमित ताम्रकार ने बताया कि कैसे रिसर्च स्कॉलर अपनी थीसिस को जमा करने से पहले यूजीसी के इस सॉफ्टवेयर उरकुंड के जरिए प्लेगरिज्म को जांच सकते हैं वो भी बगैर किसी शुल्क चुकाए। डॉ. ताम्रकार ने छात्रों को बताया कि वो प्रयास करें कि उनके शोध में 10 प्रतिशत से कम प्लेगरिज्म आए। उनका कहना था कि प्लेगरिज्म साबित होने पर साहित्यिक चोरी करने वाले को 6 माह से 3 साल की जेल, 50 हजार से 3 लाख रुपए तक जुर्माना अथवा दोनों हो सकते हैं। उन्होंने बताया कि अगर किसी ने साहित्यिक चोरी के माध्यम से शोध कर नौकरी पा ली है तो ऐसी स्थिति में उसके इंक्रीमेंट्स रोके जा सकते हैं और नौकरी से निकाला भी जा सकता है।

पूर्व में की गई किसी अन्य शोध से टेक्स्ट, फोटो, डेटा, पैराग्राफ, शोध के मूल विचार (आइडिया) इत्यादि को हू-ब-हू कॉपी कर अपनी रिसर्च में शामिल कर देना प्लेगरिज्म या साहित्य चोरी कहलाता है। रिसर्च स्कॉलर पूर्व में की गई रिसर्च के किसी हिस्से का हवाला देकर अपनी रिसर्च में शामिल कर सकता है। लेकिन अगर वह इसे बगैर किसी रिफरेंस (हवाले) के अपनी शोध में शामिल कर लेता है तो इसे साहित्य चोरी की श्रेणी में माना जाता है।

- हर साल जांचे जा सकेंगे 212 डॉक्यूमेंट्स

यूजीसी इनफ्लिबनेट का उरकुंड सॉफ्टवेयर सांची विवि को प्रत्येक वर्ष 212 डॉक्यूमेंट्स जांचने की निशुल्क सुविधा प्रदान कर रहा है। इस प्रकार से एक यूजर 4 डॉक्यूमेंट्स जांच सकता है, जबकि प्रत्येक डॉक्यूमेंट में 20 पेज तक जांचने की सुविधा है। उरकुंड सॉफ्टवेयर इंटरनेट के माध्यम से रिसर्च स्कॉलर के थीसिस के टेक्स्ट को पीला कर बता देता है कि उसके द्वारा इस हिस्से को कहां से लिया गया है और उसमें सुधार की आवश्यकता है।

उरकुंड सॉफ्टवेयर बताएगा- शोध में कितनी चोरी, 60% से अधिक तो रजिस्ट्रेशन निरस्त

News - सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के छात्रों ने शुक्रवार को शोध में साहित्य चोरी (प्लेगरिजम) जांचने...

Bhaskar News Network | Oct 05, 2019, 06:56 AM IST

दैनिक भास्कर न्यूज़

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के छात्रों ने शुक्रवार को शोध में साहित्य चोरी (प्लेगरिजम) जांचने के तरीके जाने। विवि की केंद्रीय लाइब्रेरी द्वारा छात्रों और उनके गाइड को यूजीसी के उरकुंड सॉफ्टवेयर का प्रशिक्षण प्रदान दिया गया। इस दौरान सहायक लाइब्रेरियन डॉ. अमित ताम्रकार ने बताया कि कैसे शोधार्थी अपनी थीसिस को जमा करने से पहले यूजीसी के इस सॉफ्टवेयर उरकुंड के माध्यम से प्लेगरिजम को जांच सकते हैं, वो भी बगैर किसी शुल्क चुकाए। एक शोधार्थी अपनी शोध में पूर्व में की गई शोध के किसी हिस्से को हवाला देकर अपनी शोध में शामिल कर सकता है, लेकिन अगर वह इसे बगैर किसी रिफरेंस (हवाले) के अपनी शोध में सम्मिलित कर लेता है तो इसे साहित्य चोरी की श्रेणी में माना जाता है। छात्रों को बताया कि वो प्रयास करें कि उनके शोध में 10 प्रतिशत से कम प्लेगरिजम आए। उनका कहना था कि किसी भी शोध में 60 प्रतिशत से अधिक प्लेगरिजम होने पर शोधार्थी का रजिस्ट्रेशन रद्द किया जा सकता है। यूजीसी इनफ्लिबनेट का उरकुंड सॉफ्टवेयर सांची विवि को प्रत्येक वर्ष 212 डॉक्यूमेंट्स जांचने की निशुल्क सुविधा प्रदान कर रहा है। एक यूजर 4 डॉक्यूमेंट्स जांच सकता है जबकि प्रत्येक डॉक्यूमेंट में 20 पेज तक जांचने की सुविधा है। इस दौरान विश्वविद्यालय के डीन डॉ. ओपी बुधोलिया भी मौजूद रहे।

प्रेस विज्ञप्ति

सांची विश्वविद्यालय में विशेष व्याख्यानमाला का आयोजन

- भारतीय चित्रकला विभाग कर रहा है विशेष आयोजन
- तक चलेगी व्याख्यानमाला 2019 अक्टूबर 12
- प्रथम दिवस स्वामी विवेकानंद और श्री अरबिंदो की कला चेतना पर चर्चा
- 'सौंदर्य ही सत्य है और सत्य ही सौंदर्य है'

सांची बौद्धभारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के भारतीय चित्रकला विभाग द्वारा- सात दिवसीय विशेष व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया है। अक्टूबर तक चलने वाली इस व्याख्यानमाला का उद्देश्य कला के 12 समस्त आयामों को समेटते हुए दर्शन और साहित्य से जुड़े विषयों सहित चीनी कला के विषयों पर भी बात होगी। विशेष व्याख्यानमाला के प्रथम दिवस भारतीय दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉनवीन दीक्षित ने भारतीय कला पर . स्वामी विवेकानंद और आध्यात्मिक गुरु श्री अरबिंदो के विचारों पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। जिसका विषय था विवेकानंद और श्री अरबिंदो की कला चेतना।

डॉ नवीन दीक्षित ने बताया कि स्वामी विवेकानंद और श्री अरबिंदो पाश्चात्य और भारतीय कला के विषय में क्या विचार रखते थे। उनका कहना था कि स्वामी विवेकानंद ने भारतीय दर्शन के अलावा मुगलकालीन और इस्लामिक दर्शन संबंधी कला की भी प्रशंसा की लेकिन श्री अरबिंदो भारतीय कला के अतिरिक्त पाश्चात्य कला और अन्य कलाओं की खुलकर आलोचना करते थे।

विश्वविद्यालय के डीन डॉ ओपी बुधोलिया ने कहा कि सौन्दर्य की समझ भारत में और समस्त विश्व में एक समान है। उन्होंने भारतीय साहित्य से लेकर शेक्सपीयर के साहित्य के सौंदर्य बोध का उल्लेख किया। उन्होंने अंग्रेज़ी लेखक कीट के हवाले से बताया कि वो कहता था "सौंदर्य ही सत्य है और सत्य ही सौंदर्य है" जिसका अर्थ यह है कि लेखक ईश्वर की ओर इशारा कर आध्यात्म को प्रदर्शित कर रहा है। डॉबुधोलिया ने भारतीय दर्शन में भी शिव और . पार्वती के माध्यम से भारतीय कला को परिभाषित करने का प्रयास किया।

सोमवार से लगातार सांची विश्वविद्यालय में होने वाले शेष विशेष व्याख्यान निम्नानुसार हैं-

क्र.	दिनांक	विषय	वक्ता
1.	अक्टूबर 07	**कला और ध्वनि सिद्धांत**	डॉप्रभाकर पांडे .
2.	अक्टूबर 09	**कला और राष्ट्रवाद की अवधारणा**	डॉ सुष्मिता नंदी
3.	अक्टूबर 10	**सहृदय, रस निष्पादित व अलंकार**	डॉ विश्व बंधु
4.	अक्टूबर 11	**चीनी कला में रूप तत्व व कैलिग्राफी**	डॉ प्राची अग्रवाल
5.	अक्टूबर 11	**पाश्चात्य दार्शनिक और उनकी कला दृष्टि**	डॉ नवीन कुमार मेहता
6.	अक्टूबर 12	**सांची के तोरण द्वारों में प्रतीक**	डॉ संतोष प्रियदर्शी

dprmp.org/NewsDetail.aspx?newsid=738819&disid=2

जनसम्पर्क विभाग, मध्यप्रदेश
जिला जनसंपर्क कार्यालय, रायसेन

मुख्य पृष्ठ | भोपाल | ग्वालियर | चम्बल | इन्दौर | जबलपुर | नर्मदापुरम | रीवा | सागर | शहडोल | उज्जैन

|| इस वर्ष 119.18 लाख हेक्टेयर क्षेत्र

सांची विश्वविद्यालय में विशेष व्याख्यानमाला का आयोजन

भारतीय चित्रकला विभाग कर रहा है विशेष आयोजन, 12 अक्टूबर 2019 तक चलेगी व्याख्यानमाला

रायसेन | 05-अक्तूबर-2019

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के भारतीय चित्रकला विभाग द्वारा सात दिवसीय विशेष व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया है। 12 अक्टूबर तक चलने वाली इस व्याख्यानमाला का उद्देश्य कला के समस्त आयामों को समेटते हुए दर्शन और साहित्य से जुड़े विषयों सहित चीनी कला के विषयों पर भी बात होगी। विशेष व्याख्यानमाला के प्रथम दिवस भारतीय दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. नवीन दीक्षित ने भारतीय कला पर स्वामी विवेकानंद और आध्यात्मिक गुरु श्री अरबिंदो के विचारों पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। जिसका विषय था विवेकानंद और श्री अरबिंदो की कला चेतना।

डॉ नवीन दीक्षित ने बताया कि स्वामी विवेकानंद और श्री अरबिंदो पाश्चात्य और भारतीय कला के विषय में क्या विचार रखते थे। उनका कहना था कि स्वामी विवेकानंद ने भारतीय दर्शन के अलावा मुगलकालीन और इस्लामिक दर्शन संबंधी कला की भी प्रशंसा की लेकिन श्री अरबिंदो भारतीय कला के अतिरिक्त पाश्चात्य कला और अन्य कलाओं की खुलकर आलोचना करते थे।

विश्वविद्यालय के डीन डॉ ओपी बुधोलिया ने कहा कि सौन्दर्य की समझ भारत में और समस्त विश्व में एक समान है। उन्होंने भारतीय साहित्य से लेकर शेक्सपीयर के साहित्य के सौंदर्य बोध का उल्लेख किया। उन्होंने अंग्रेज़ी लेखक कीट के हवाले से बताया कि वो कहता था "सौंदर्य ही सत्य है और सत्य ही सौंदर्य है" जिसका अर्थ यह है कि लेखक ईश्वर की ओर इशारा कर आध्यात्म को प्रदर्शित कर रहा है। डॉ. बुधोलिया ने भारतीय दर्शन में भी शिव और पार्वती के माध्यम से भारतीय कला को परिभाषित करने का प्रयास किया। सांची विश्वविद्यालय में 07 अक्टूबर को कला और ध्वनि सिद्धांत पर डॉ. प्रभाकर पांडे, 09 अक्टूबर को कला और राष्ट्रवाद की अवधारणा पर डॉ सुष्मिता नंदी, 10 अक्टूबर को सहृदय, रस निष्पादित व अलंकार पर डॉ विश्व बंधु, 11 अक्टूबर को चीनी कला में रुप तत्व व कैलिग्राफी पर डॉ प्राची अग्रवाल, 11 अक्टूबर को पाश्चात्य दार्शनिक और उनकी कला दृष्टि पर डॉ नवीन कुमार मेहता तथा 12 अक्टूबर को सांची के तोरण द्वारों में प्रतीक पर डॉ संतोष प्रियदर्शी व्याख्यान देंगी।

(31 days ago)

डाउनलोड करे कृतीदेव फोन्ट में.

डाउनलोड करे चाणक्य फोन्ट में.

पाठकों की पसंद

- कलेक्टर सहित सभी जिला अधिकारियों ने किया पलोहा तथा फतेहपुर गांव का भ्रमण "आपकी सरकार आपके द्वार"
- कलेक्टर, एसपी तथा सीईओ सहित जिला अधिकारियों ने किया बेरुआ तथा छींद गांव का भ्रमण (आपकी सरकार आपके द्वार)
- बेगमगंज में आयोजित आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में शामिल होंगे प्रभारी मंत्री
- लोगों को दिए वचन प्राथमिकता के साथ पूरा कर रही है प्रदेश सरकार- प्रभारी मंत्री श्री यादव
- कलेक्टर एवं एसपी ने शहीदों को अर्पित किए श्रृद्धा सुमन
- भीख मांगने वाले बच्चें अब पहुंचने लगे हैं स्कूल
- प्रत्येक जरुरतमंद व्यक्ति को मिलेगा शासन की योजनाओं का लाभ- प्रभारी मंत्री (आपकी सरकार आपके द्वार)

संग्रह

अक्तूबर | नवम्बर 2019 | दिसम्बर

सोम.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	रवि.
28	29	30	31	1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	1
2	3	4	5	6	7	8

Best viewed in IE 7.0 and above with monitor resolution 1024x768. Powered By Cneder's Computer System

naidunia.com/madhya-pradesh/vidisha-raisen-news-3185842

नईदुनिया | MENU | राज्य चुनें | राशिफल | विचार | शिक्षा

में लोग जलाते हैं दीप

रायसेन। नवदुनिया प्रतिनिधि

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के भारतीय चित्रकला विभाग द्वारा सात दिवसीय विशेष व्याख्यानमाला का आयोजन कि या जा रहा है। 12 अक्टूबर तक चलने वाली इस व्याख्यानमाला का उद्देश्य कला के समस्त आयामों को समेटते हुए दर्शन और साहित्य से जुड़े विषयों सहित चीनी कला के विषयों पर भी बात होगी। विशेष व्याख्यानमाला के प्रथम दिवस भारतीय दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. नवीन दीक्षित ने भारतीय कला पर स्वामी विवेकानंद और आध्यात्मिक गुरु अरबिंदो के विचारों पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत कि या। जिसका विषय था विवेकानंद और श्री अरबिंदो की कला चेतना। डॉ नवीन दीक्षित ने बताया कि स्वामी विवेकानंद और अरबिंदो पाश्चात्य और भारतीय कला के विषय में क्या विचार रखते थे। उनका कहना था कि स्वामी विवेकानंद ने भारतीय दर्शन के अलावा मुगलकालीन और इस्लामिक दर्शन संबंधी कला की भी प्रशंसा की, लेकि न अरबिंदो भारतीय कला के अतिरिक्त पाश्चात्य कला और अन्य कलाओं की खुलकर आलोचना करते थे। विश्वविद्यालय के डीन डॉ. ओपी बुधोलिया ने कहा कि सौन्दर्य की समझ भारत में और समस्त विश्व में एक समान है। उन्होंने भारतीय साहित्य से लेकर शेक्सपीयर के साहित्य के सौंदर्य बोध का उल्लेख कि या। उन्होंने अंग्रेजी लेखक कीट के हवाले से बताया कि वो कहता था सौंदर्य ही सत्य है और सत्य ही सौंदर्य है। जिसका अर्थ यह है कि लेखक ईश्वर की ओर इशारा कर आध्यात्म को प्रदर्शित कर रहा है। डॉ. बुधोलिया ने भारतीय दर्शन में भी शिव और पार्वती के माध्यम से भारतीय कला को परिभाषित करने का प्रयास कि या। सांची विश्वविद्यालय में 7 अक्टूबर को कला और ध्वनि सिद्धांत पर डॉ. प्रभाकर पांडे, 9 अक्टूबर को कला और राष्ट्रवाद की अवधारणा पर डॉ. सुमिता नंदी, 10 अक्टूबर को सहृदय, रस निष्पादित व अलंकार पर डॉ विश्व बंधु, 11 अक्टूबर को चीनी कला में रुप तत्व व कैलिग्राफी पर डॉ. प्राची अग्रवाल, 11 अक्टूबर को पाश्चात्य दार्शनिक और उनकी कला दृष्टि पर डॉ. नवीन कु मार मेहता तथा 12 अक्टूबर को सांची के तोरण द्वारों में प्रतीक पर डॉ. संतोष प्रियदर्शी व्याख्यान देंगी। इसके बाद व्याख्यान माला का समापन कि या जाएगा।

प्रेस विज्ञप्ति

सांची विवि में सात दिवसीय व्याख्यानमाला का समापन

- व्याख्यानमाला में कई विषयों पर हुआ विचारविमर्श-
- सांची स्तूप में तोरण द्वारों के महत्व पर भी चर्चा
- तोरण द्वारों पर उकेरी गई हैं जातक कथाएं
- उत्तर और दक्षिण पथ का चौराहा था सांची विदिशा
- अशोक ने हज़ार स्तूपों का निर्माण करवाया था 84

सांची बौद्धभारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में सप्त दिवसीय कार्यशाला के आखिरी दिन भारतीय - चित्रकारी विभाग की प्रमुख डॉ सुष्मिता नंदी ने गुरु रबिंद्रनाथ टैगोर के संदर्भ में कला और राष्ट्रवाद विषय पर बात की। डॉ सुष्मिता नंदी ने बताया कि टैगोर, राष्ट्र को भौगोलिक सीमा से नहीं बल्कि मूल्यबोध के आधार पर परिभाषित करते थे।

उन्होंने बताया कि शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में गुरु रविंद्रनाथ वीं 20टैगोर राष्ट्रवाद का समर्थन संस्कृति के आधार पर करते थे लेकिन बाद के दशकों में जब राष्ट्रवाद, मानववाद के विरुद्ध खड़ा दिखाई देने लगा तो उन्होंने राष्ट्रवाद के विषय को छोड़ दिया।

डॉ सुष्मिता नंदी ने बताया कि गुरु रविंद्रनाथ टैगोर अपने दौर के समकालीन चित्रकारों रवि वर्मा, म्हात्रे, जेपी गांगुली इत्यादि से प्रभावित थे। टैगोर ने लोगों को जापान की चित्रकला के विषय में जागरुक किया। उनका कहना था कि टैगोर, ईवी हैवल, एके कुमारास्वामी., ओकाकोरा काकुज़ो, ताइशो, सिस्टर निवेदिता इत्यादि की कला से भी प्रभावित थे।

इस सप्त दिवसीय कार्यशाला में डॉसंतोष प्रियदर्शी ने . 'सांची के तोरण द्वारों में प्रतीक' विषय पर व्याख्यान में बताया कि इन चारों तोरण द्वारों में जातक कथाओं को उकेरा गया है। इसके अलावा अन्य कहानियां और स्थानीय किंवदंतियों को भी इन तोरण द्वारों में समाहित किया गया है। डॉ प्रियदर्शी का कहना था कि भगवान बुद्ध की 550 प्राप्त होती हैं। डॉ संतोष प्रियदर्शी ने बताया कि महान सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म 547 जातक कथाएं हैं जिनमें से हज़ार स्तूपों का निर्माण करवाया था। 84 की दीक्षा लेने के बाद

डॉ प्रियदर्शी ने सांची और विदिशा के महत्व के विषय में भी छात्रों को बताया कि उत्तर और दक्षिण भारत को जोड़ने वाले मुख्य मार्ग के चौराहे के रूप में विदिशा स्थित था। (सांची)

डॉ संतोष प्रियदर्शी ने बताया कि भगवान बुद्ध ने अपने जीवन में ही घोषणा कर दी थी कि उनकी न प्रतिमा बनाई जाए और न ही चित्र। लेकिन बाद के दौर में उनकी मूर्तियां भी बनाई गईं और चित्र भी। गांधार कला में सबसे पहले बुद्ध की मूर्ति प्राप्त होती है। इसी तरह से मथुरा कला में बलुआ पत्थर पर भी बुद्ध की सुंदर प्रतिमाएं बनाई गईं।

साचीं विवि में सात दिवसीय व्याख्यानमाला का समापन

9:26 am on October 15, 2019

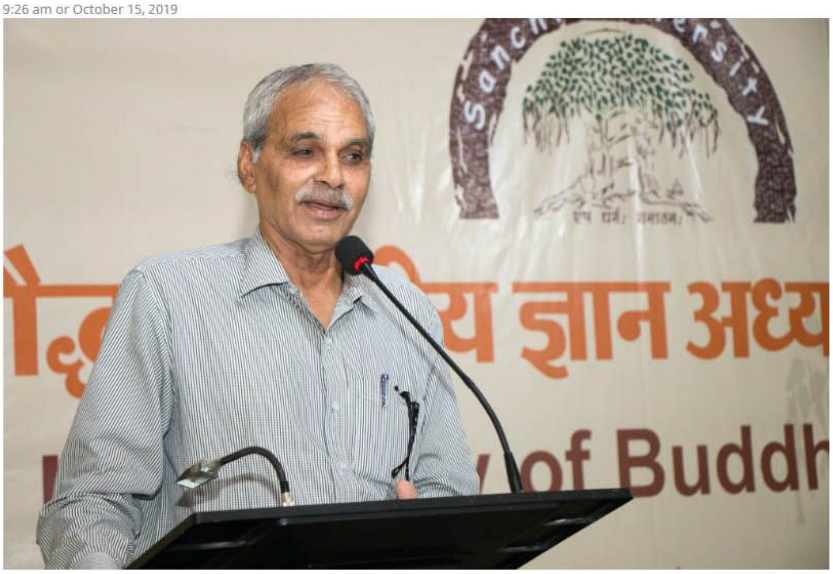

दीपक कांकर

रायसेन 15 अक्टूबर ;अभी तक; सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में कल सप्त दिवसीय कार्यशाला के आखिरी दिन भारतीय चित्रकारी विभाग की प्रमुख डॉ सुष्मिता नंदी ने गुरु रविंद्रनाथ टैगोर के संदर्भ में कला और राष्ट्रवाद विषय पर बात की। डॉ सुष्मिता नंदी ने बताया कि टैगोर, राष्ट्र को भौगोलिक सीमा से नहीं बल्कि मूल्यबोध के आधार पर परिभाषित करते थे।

उन्होंने बताया कि 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में गुरु रविंद्रनाथ टौगोर राष्ट्रवाद का समर्थन संस्कृति के आधार पर करते थे लेकिन बाद के दशकों में जब राष्ट्रवाद, मानववाद के विरुद्ध खड़ा दिखाई देने लगा तो उन्होंने राष्ट्रवाद के विषय को छोड़ दिया।

सांची विवि में सात दिवसीय व्याख्यानमाला का समापन

डॉ सुष्मिता नंदी ने बताया कि गुरु रविंद्रनाथ टैगोर अपने दौर के समकालीन चित्रकारों रवि वर्मा, म्हात्रे, जेपी गांगुली इत्यादि से प्रभावित थे। टैगोर ने लोगों को जापान की चित्रकला के विषय में जागरुक किया। उनका कहना था कि टैगोर, ईवी हैवल, ए.के कुमारास्वामी, ओकाकोरा काकुज़ो, ताइशो, सिस्टर निवेदिता इत्यादि की कला से भी प्रभावित थे।

इस सप्त दिवसीय कार्यशाला में डॉ. संतोष प्रियदर्शी ने 'सांची के तोरण द्वारों में प्रतीक' विषय पर व्याख्यान में बताया कि इन चारों तोरण द्वारों में जातक कथाओं को उकेरा गया है। इसके अलावा अन्य कहानियां और स्थानीय किंवदंतियों को भी इन तोरण द्वारों में समाहित किया गया है। डॉ प्रियदर्शी का कहना था कि भगवान बुद्ध की 550 जातक कथाएं हैं जिनमें से 547 प्राप्त होती हैं। डॉ संतोष प्रियदर्शी ने बताया कि महान सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने के बाद 84 हज़ार स्तूपों का निर्माण करवाया था।

डॉ प्रियदर्शी ने सांची और विदिशा के महत्व के विषय में भी छात्रों को बताया कि उत्तर और दक्षिण भारत को जोड़ने वाले मुख्य मार्ग के चौराहे के रूप में विदिशा (सांची) स्थित था।

डॉ संतोष प्रियदर्शी ने बताया कि भगवान बुद्ध ने अपने जीवन में ही घोषणा कर दी थी कि उनकी न प्रतिमा बनाई जाए और न ही चित्र। लेकिन बाद के दौर में उनकी मूर्तियां भी बनाई गईं और चित्र भी। गांधार कला में सबसे पहले बुद्ध की मूर्ति प्राप्त होती है। इसी तरह से मथुरा कला में बलुआ पत्थर पर भी बुद्ध की सुंदर प्रतिमाएं बनाई गईं।

सांची विवि में सात दिवसीय व्याख्यानमाला का समापन

रायसेन | 15-अक्तूबर-2019

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में सप्त दिवसीय कार्यशाला के आखिरी दिन भारतीय चित्रकारी विभाग की प्रमुख डॉ सुष्मिता नंदी ने गुरु रबिंद्रनाथ टैगोर के संदर्भ में कला और राष्ट्रवाद विषय पर बात की। डॉ सुष्मिता नंदी ने बताया कि टैगोर, राष्ट्र को भौगोलिक सीमा से नहीं बल्कि मूल्यबोध के आधार पर परिभाषित करते थे। उन्होंने बताया कि 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में गुरु रविंद्रनाथ टौगोर राष्ट्रवाद का समर्थन संस्कृति के आधार पर करते थे लेकिन बाद के दशकों में जब राष्ट्रवाद, मानववाद के विरुद्ध खड़ा दिखाई देने लगा तो उन्होंने राष्ट्रवाद के विषय को छोड़ दिया।

डॉ सुष्मिता नंदी ने बताया कि गुरु रविंद्रनाथ टैगोर अपने दौर के समकालीन चित्रकारों रवि वर्मा, म्हात्रे, जेपी गांगुली इत्यादि से प्रभावित थे। टैगोर ने लोगों को जापान की चित्रकला के विषय में जागरुक किया। उनका कहना था कि टैगोर, ईवी हैवल, ए.के कुमारास्वामी, ओकाकोरा काकुज़ो, ताइशो, सिस्टर निवेदिता इत्यादि की कला से भी प्रभावित थे। इस सप्त दिवसीय कार्यशाला में डॉ. संतोष प्रियदर्शी ने 'सांची के तोरण द्वारों में प्रतीक' विषय पर व्याख्यान में बताया कि इन चारों तोरण द्वारों में जातक कथाओं को उकेरा गया है। इसके अलावा अन्य कहानियां और स्थानीय किंवदंतियों को भी इन तोरण द्वारों में समाहित किया गया है। डॉ प्रियदर्शी का कहना था कि भगवान बुद्ध की 550 जातक कथाएं हैं जिनमें से 547 प्राप्त होती हैं। डॉ संतोष प्रियदर्शी ने बताया कि महान सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने के बाद 84 हज़ार स्तूपों का निर्माण करवाया था।

डॉ प्रियदर्शी ने सांची और विदिशा के महत्व के विषय में भी छात्रों को बताया कि उत्तर और दक्षिण भारत को जोड़ने वाले मुख्य मार्ग के चौराहे के रूप में विदिशा (सांची) स्थित था। डॉ संतोष प्रियदर्शी ने बताया कि भगवान बुद्ध ने अपने जीवन में ही घोषणा कर दी थी कि उनकी न प्रतिमा बनाई जाए और न ही चित्र। लेकिन बाद के दौर में उनकी मूर्तियां भी बनाई गईं और चित्र भी। गांधार कला में सबसे पहले बुद्ध की मूर्ति प्राप्त होती है। इसी तरह से मथुरा कला में बलुआ पत्थर पर भी बुद्ध की सुंदर प्रतिमाएं बनाई गईं।

प्रेस विज्ञप्ति

सांची विवि में मना राष्ट्रीय एकता दिवस

- सरदार ने किया देश को एकजुट, 562 रियासतों को जोड़ा
- पटेल ने राज्यों की सांस्कृतिक विविधता को कायम रखा

सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्मदिवस पर सांची बौद्धभारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय - एकता दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अंग्रेजीविभाग के सह प्राध्यापक डॉ नवीन कुमार मेहता ने सरदार पटेल के जीवन और राष्ट्र एकता में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला। योग विभाग के प्रभारी डॉ उपेन्द्र बाबू खत्री ने कहा कि भेद की नीति राष्ट्र संकल्पना का हिस्सा नहीं है। उन्होने कहा कि राष्ट्र और एकता शब्द अलग है किंतु मूल अवधारणा एक है जिसमें राष्ट्र भौगोलिक सीमा से परे एक संकल्पना है। इस अवसर पर संस्कृत विभाग के डॉ विश्वबंधु ने कहा कि भारतीय संस्कृति में राष्ट्र की अवधारणा सबसे पहले ऋग्वेद में मिलती है जहा राष्ट्र देवी की प्रार्थना की गई है। उन्होने कहा कि सरदार पटेल ने भारत की अस्मिता को अक्षुण्ण रखने में अपनी भूमिका निभाई।

भारतीय दर्शन के डॉ नवीन दीक्षित ने कहा कि एकता विविधता को खत्म करने वाली नहीं होनी चाहिए और सरदार पटेल पश्चिमी एकता के पैमाने की बजाय भारत का अपना पैमाना रखते थे जिसमें राज्यों को सांस्कृतिक एवं संप्रभु अधिकार मिले और भारत की विविधता कायम रही। उन्होने कहा कि सरदार पटेल ने पश्चिमी विद्वानों के भारत के आजाद होने के बाद विखंडन की आशंकाओं को निराधार साबित किया।

सांची विवि के अकादमिक समन्वयक डॉ मुकेश कुमार वर्मा ने कहा कि सरदार पटेल ने रियासतों को 562 मिलाकर भारत की बहुत बड़ी सेवा की है। उन्होने जम्मू कश्मीर को भारत में बनाए रखने में सरदार पटेल की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। विवि के कार्यक्रम के अंत में सहायक कुलसचिव डॉ अमित ताम्रकार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में विवि के छात्र, शिक्षकवृंद एवं कर्मचारियों ने हिस्सा लिया।

दैनिक जागरण 01 नवंबर 2019
www.jagranmp.com/epaper
रायसेन 04

सांची विश्वविद्यालय में मनाया गया राष्ट्रीय एकता दिवस

रायसेन। सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस पर सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अंग्रेजी विभाग के सह प्राध्यापक डॉ नवीन कुमार मेहता ने सरदार पटेल के जीवन और राष्ट्र एकता में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला। योग विभाग के प्रभारी डॉ उपेन्द्र बाबू खत्री ने कहा कि भेद की नीति राष्ट्र संकल्पना का हिस्सा नहीं है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र और एकता शब्द अलग है किंतु मूल अवधारणा एक है जिसमें राष्ट्र भौगोलिक सीमा से परे एक संकल्पना है। इस अवसर पर संस्कृत विभाग के डॉ विश्वबंधु ने कहा कि भारतीय संस्कृति में राष्ट्र की अवधारणा सबसे पहले ऋग्वेद में मिलती है जहा राष्ट्र देवी की प्रार्थना की गई है। उन्होने कहा कि सरदार पटेल ने भारत की अस्मिता को अक्षुण्ण रखने में अपनी भूमिका निभाई। भारतीय दर्शन के डॉ नवीन दीक्षित ने कहा कि एकता विविधता को खत्म करने वाली नहीं होनी चाहिए और सरदार पटेल पश्चिमी एकता के पैमाने की बजाय भारत का अपना पैमाना रखते थे जिसमें राज्यों को सांस्कृतिक एवं संप्रभु अधिकार मिले और भारत की विविधता कायम रही। उन्होने कहा कि सरदार पटेल ने पश्चिमी विद्वानों के भारत के आजाद होने के बाद विखंडन की आशंकाओं को निराधार साबित किया। सांची विवि के अकादमिक समन्वयक डॉ मुकेश कुमार वर्मा ने कहा कि सरदार पटेल ने 562 रियासतों को मिलाकर भारत की बहुत बड़ी सेवा की है। उन्होंने जम्मू कश्मीर को भारत में बनाए रखने में सरदार पटेल की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। विवि के कार्यक्रम के अंत में सहायक कुलसचिव डॉ अमित ताम्रकार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में विवि के छात्र, शिक्षकवृंद एवं कर्मचारियों ने हिस्सा लिया।

जागरण Lake सिटी

सांची विवि में मना राष्ट्रीय एकता दिवस

सरदार ने किया देश को एकजुट 562 रियासतों को जोड़ा

● जागरण सिटी रिपोर्टर ●

सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्मदिवस पर सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन गुरुवार को किया गया। इस अवसर पर अंग्रेजी विभाग के सह प्राध्यापक डॉ. नवीन कुमार मेहता ने सरदार पटेल के जीवन और राष्ट्र एकता में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला। योग विभाग के प्रभारी डॉ. उपेन्द्र बाबू खत्री ने कहा कि भेद की नीति राष्ट्र संकल्पना का हिस्सा नहीं है। उन्होने कहा कि राष्ट्र और एकता शब्द अलग है किंतु मूल अवधारणा एक है जिसमें राष्ट्र भौगोलिक सीमा से परे एक संकल्पना है। इस अवसर पर संस्कृत विभाग के डॉ. विश्वबंधु ने कहा कि भारतीय संस्कृति में राष्ट्र की अवधारणा सबसे पहले ऋगवेद में मिलती है, जहां राष्ट्र देवी की प्रार्थना की गई है। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने भारत की अस्मिता को अक्षुण्ण रखने में अपनी भूमिका निभाई।

भारतीय दर्शन के डॉ. नवीन दीक्षित ने कहा कि एकता विविधता को खत्म करने वाली नहीं होनी चाहिए और सरदार पटेल पश्चिमी एकता के पैमाने की बजाय भारत का अपना पैमाना रखते थे जिसमें राज्यों को सांस्कृतिक एवं संप्रभु अधिकार मिले और भारत की विविधता कायम रही। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने पश्चिमी विद्वानों के भारत के आजाद होने के बाद विखंडन की आशंकाओं को निराधार साबित किया।

सांची विवि के अकादमिक समन्वयक डॉ. मुकेश कुमार वर्मा ने कहा कि सरदार पटेल ने 562 रियासतों को मिलाकर भारत की बहुत बड़ी सेवा की है। उन्होने जम्मू कश्मीर को भारत में बनाए रखने में सरदार पटेल की भूमिका पर भी प्रकाश डाला।